Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का सामाजिक अभिवृत्ति एवम् व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का सामाजिक अभिवृत्ति एवम् व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव

Prathamik Star Par Adhyayanrat Vidyarthiyon Ke Liye Parivarik Vatavaran Ka Samajik Abhivriti Evam Vyaktigat Moolyon Par Prabhav

Talvindra Singh[1] Dr. Satyavir Yadav[2]

[1]Research Scholar, CMJ University, Shillong, Meghalaya

[2]M. A. M. Phil PHD (Shiksha)

----------♦----------

प्रत्येक शिक्षा तन्त्र का प्रमुख उद्देश्य बालकों में उन मूल्यों का विकास करना है जो उसकी संस्कृति, समाज एवम् राष्ट्र द्वारा विकसित कर निर्धारित किये गये है। मूल्य बालक के भावात्मक पक्ष के विकास को इंगित करते है जो कि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ती स्तर का अन्तिम स्वरूप है। राष्ट्र द्वारा स्थापित शिक्षातन्त्र में मूल्य विकास को सबसे अहम् स्थान प्रदान किया गया है। भारत के विभिन्न शिक्षा आयोगों जैसे विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1950), प्रा. शिक्षा आयोग (1953), कोठारी कमीशन (1966) एवम् नई शिक्षा नीति (1986) में मूल्यों के विकास एवम् संधरण पर विशेष बल दिया गया है। नई शिक्षा नीति का प्रमुख ध्यये बालकों में सामाजिक एवम् नैतिक मूल्यों का विकास है और इसके लिए पाठ्यक्रम में परिवर्तन की भी बात कही नई है। क्योंकि वर्तमान शिक्षातन्त्र मूल्यों के संकट द्वन्द चल रहा है। ऐसी स्थिति में मूल्यों के विकास एवम् संधारण का ध्येय केवल विद्यालय तक ही सीमित हो, यह न्यायोचित नही है। शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया में यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि बालक के कार्य एवम् व्यवहार को केवल विद्यालय वातावरण पारिवारिक वातावरण, सामाजिक वातावरण प्रभावित करता है या यह एक सभी कारकों की मिश्रित प्रक्रिया है।

बालक के विकास में परिवार के वातावरण का विशेष महत्व होता है। बालक में संस्कारों, सदाचारों एवम् मूल्यों के विकास का आधार बालक का पारिवारिक वातावरण होता है। परिवार अपने आप में एक अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र है जिसमें बालक समाज में निर्दिष्ट मूल्यों, आचरणों तथा व्यवहारों का अवलोकन करता है।

इसलिए विद्यालय के साथ–साथ परिवार की भी मूल्यों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका हो जाती है। विद्यालय द्वारा बालक में मूल्यों तथा चरित्र का विकास करना सुनिश्चित है। लेकिन इन मूल्यों का व्यावहारिक पक्ष परिवार एवम् समाज में निहित है। ऐसी स्थिति में विद्यालय परिवार एवम् समाज का बालक के मूल्य विकास में योगदान और अधिक बढ़ जाता है।

बालक की स्वयं की सोच, योग्यताएँ उसके द्वारा सम्पादित कार्यो, अर्जित लक्षणों को प्रभावित करती है। इन प्रभावी कारकों की श्रृंखला में अभिवृतियों का स्थान प्रमुख है क्योंकि अभिवृतियाँ किसी व्यक्ति समूह या संस्था, विशेष के प्रति एक सोच है जो उसके दृष्टिकोण को इंगित करती है। अभिवृति एक मानसिक प्रक्रिया है जो सकारात्मक एवम् नकारात्मक होते हुए व्यक्ति के व्यवहार को दिशा प्रदान करती है। प्रत्येक बालक के लिए अभिवृतियाँ अनुभव करती है। विद्यालय वातावरण, पारिवारिक वातावरण बालक की अभिवृतियों को केवल प्रभावित ही नही करता अपितु उनकी दिशा एवम् गहनता का निर्धारण भी करता है।

विज्ञान एवम् तकनीकी के विकास ने समाज को एक नई दिशा प्रदान की है जिससे सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ व्यक्तियों एवम् बालकों की सोच, कार्यशैली एवम् मूल्यों में भी परिवर्तन आया है। अतः यह जानना आवश्यक हो जाता है कि बालक की अभिवृतियों एवम् वातावरण का उसके मूल्य विकास तथा मूल्य संधारण पर क्या प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध द्वारा बालकों के पारिवारिक वातावरण, उनकी सामाजिक अभिवृति तथा मूल्यों की संस्थिति का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

कार्टर. बी. बुड़ के अनुसार – ''यदि कोई मनुष्य किसी कार्य को करने के लिए तत्पर होता है तो उस व्यक्ति के समक्ष अपना कोई उद्देश्य होता है, लक्ष्य निर्धारण के बिना कोई भी कार्य सुनियोजित ढ़ंग से नही किया जा सकता, क्योंकि उद्देश्य ही वह बिन्दु है जिसकी प्राप्ति व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।''

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोधकार्य में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये है :–

1. फिरोजपुर जिले के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
2. फिरोजपुर जिले के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक अभिवृति का अध्ययन करना।

3. फिरोजपुर जिले के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन करना।

4. फिरोजपुर जिले के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का सामाजिक अभिवृति पर प्रभाव का अध्ययन करना।

5. फिरोजपुर जिले के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

6. फिरोजपुर जिले के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों (बालक – बालिकाओं) के पारिवारिक वातावरण का पृथक् – पृथक रूप से उनके मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. शर्मा डी.एल. – शिक्षा तथा भारतीय समाज, लायल बुक डिपों मेरठ

2. व्यास कैलाश चन्द्र – शिक्षण पत्रिका ''प्रजातान्त्रिक मूल्य एवम् शिक्षा'' जुलाई–सितम्बर 1996

3. डॉ. गुप्ता नत्थुलाल – मूल्य परक शिक्षा

4. डॉ. पाण्डेय रामशक्ल – मूल्य शिक्षण

5. शर्मा राजेन्द्र कुमार – सामाजिक सर्वेक्षण और अनुसंधान विधियाँ

6. डॉ. शुक्ला डी.पी. – रिसर्च मैथाडोलोजी

7. गैरिट ई. हैनरी – शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी

8. डॉ. राय पारसनाथ – शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र

9. एच. के कपिल – सांख्यिकी के मूल तत्व

10. पाठक अरविन्द – शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र

11. राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान – वाल्यूम–।

12. राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान – वाल्यूम–।।

13. Buch. M.B. – Second Surveyt of Research in Education (1978-83)

14. Buch. M.B.-Third Survey of Research in Education (1978-83)

15. गोपलानी, गीता – प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों के शिक्षा के प्रति अभिवृति एवम् मूल्यों का अध्ययन (रा.उ.अ. शिक्षा संस्थान अजमेर 1998–99)

16. राठौड़ नीलरतन – प्रा0 स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन (रा.उ.अ. शिक्षा संस्थान अजमेर 1998–99)

www.ignited.in